B.A (Hons) Part III
Philosophy - Paper - V
Topic - ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में नैतिक युक्ति
Dr. Sachidanand Prasad.
R.R.S. College, Mokama.

ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए कई युक्तियाँ पूर्व दर्शन में दी गई है। नैतिक युक्ति भी उनमें से एक है। इसे अंग्रेजी में Moral Argument for the existence of God कहते है। इस युक्ति में नैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ईश्वर को नीतिपूर्ण माना गया है और कहा गया है कि ईश्वर के अस्तित्व के अभाव में नैतिकता की रक्षा संभव नहीं है। जर्मन दार्शनिक कान्ट ने कहा है कि ईश्वर संबंधि विचार बाह्य विश्व की व्याख्या से प्राप्त नहीं होता है बल्कि ईश्वर संबंधि विचार का स्रोत मानव का जीवन है। इसमें में यह बतलाया गया है कि ईश्वर की सत्ता में नैतिक जीवन की समस्याओं का सफल समाधान होता है। कान्ट का कहना है कि नैतिक आत्मा सर्वोच्च शुभ की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहती है। कान्ट ने बतलाया है कि सर्वोच्च शुभ में धर्म और सुख दो तत्व होते है। यहाँ कर्तव्यपूर्ति की चेतना को धर्म और तृप्त इच्छा की चेतना को सुख कहा जाता है। सर्वोच्च शुभ की प्राप्ति के लिए धर्म और सुख का मिलन आवश्यक है। धर्म बौद्धिक विश्व तथा सुख दृश्य जगत से संबंधित है। इन दोनों तत्वों का मिलन जो सर्वोच्च शुभ के लिए आवश्यक है, एक समस्या है। कान्ट इस समस्या का समाधान ईश्वर को दोनों जगत का आधार मानकर करते है।

इसप्रकार कान्ट के अनुसार ईश्वर धर्म और सुख को मिलाकर सर्वोच्च शुभ को अपनाने मे सहायता ~~करती~~ करते हैं। नैतिक युक्ति का समर्थन करते हुए प्रसिद्ध दार्शनिक मार्टिनो ने नैतिक आदर्श को सर्वोपरि माना है। उनके अनुसार नैतिक आदर्श का अर्थ आत्मा की पूर्णता है। मार्टिनो का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्दर नैतिकता की प्राप्ति के लिए बाध्यता महसुस करता है जिससे ~~यह~~ प्रमाणित होता है कि नैतिक आदर्श भ्रम की स्थिति नही है। फिर इसे असत्य भी नही कहा जा सकता है क्योकि यदि नैतिक आदर्श को असत्य कहा जाये तो ऐसी स्थिति मे नैतिकता निरर्थक हो जायेगी। इसप्रकार मार्टिनो ने बतलाया कि चूंकि नैतिक आदर्श सत्य है इसलिए ईश्वर ही नैतिक आदर्श का प्रतीक है।

प्रसिद्ध दार्शनिक रैशडेल ने भी इस युक्ति का समर्थन किया है। उनका नैतिक युक्ति वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद पर आधारित है। रैशडेल का कहना है कि नैतिकता का संबंध आदर्श से है। उनका कहना है कि नैतिकता की सही व्याख्या प्रत्ययवाद से ही संभव है। रैशडेल ने सही नैतिकता को निरपेक्ष

माना है और कहा है कि निरपेक्ष नैतिकता मानवीय इच्छा से पूर्णतः स्वतंत्र है। इसप्रकार रैशडेल के अनुसार निरपेक्ष नैतिकता का आधार ईश्वर है।

आलोचना :- आलोचकों ने आलोचना करते हुए कहा है कि इस सिद्धान्त में ईश्वर के स्थान को बदल दिया गया है। हमलोग नैतिक इसलिए होते हैं ताकि ईश्वर की प्राप्ति हो सके। यहाँ नैतिकता साधन है और ईश्वर साध्य है परन्तु नैतिक युक्ति में ईश्वर को साधन और नैतिकता को साध्य माना जाता है। ईश्वर की सत्ता सर्वोच्च शुभ को अपनाने में सहायक होती है। अतः आलोचकों का कहना है कि यह युक्ति ईश्वर को गौण स्थान प्रदान करता है। आलोचकों ने कहा है कि मार्टिनो ने नैतिकता की व्याख्या के लिए ईश्वर को माना है। परन्तु यह विचार सही नहीं है क्योंकि नैतिकता का आधार ब्रह्म है। आलोचकों के अनुसार नैतिकता के लिए ईश्वर आवश्यक नहीं है। आलोचकों ने कहा है कि रैशडेल ने नैतिकता और सच्ची नैतिकता में अन्तर करने का प्रयास किया है, जो अनुचित है। रैशडेल ने सच्ची नैतिकता को वस्तुनिष्ठ माना है और नैतिकता को भी वस्तुनिष्ठ कहा है। ऐसी स्थिति में सच्ची नैतिकता और नैतिकता में अन्तर करना असंभव हो जाता है।